प्रस्तुतकर्ता

संजय भारती

असिस्टेंट प्रोफेसर – समाजशास्त्र

राजकीय महाविद्यालय जक्खिनी वाराणसी

विषय- समाजशास्त्र

नई शिक्षा नीति – 2020

इकाई – प्रथम

बी.ए. - प्रथम सेमेस्टर (माइनर एंड मेजर)

पुस्तक - समाजशास्त्र के मूल तत्व एवं अवधारणाएं

उपशीर्षक- समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र

स्वघोषणा

(disclaimer/ self-Declaration)

यह सामग्री विशेष रुप से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए है।आर्थिक /वाणिज्यिक अथवा किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग पूर्णता प्रतिबंधित है। सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी और के साथ वितरित, प्रसारित या साझा नहीं करेंगे और इसका प्रयोग व्यक्तिगत ज्ञान की उन्नति के लिए ही करेंगे। इस कंटेंट में जो जानकारी दी गई है वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है।

" The content is exclusively meant for academic purpose and for enhancing teaching and learning. Any other used for economic / commercial purpose is strictly prohibited the users of the content shall not distribute, disseminate or share it with anyone else and its use is restricted and advancement of individual knowledge. The information provided in this e-content is authentic and best as per my knowledge."

- समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र
- स्वरूपात्मक संप्रदाय अथवा विशिष्टात्मक संप्रदाय **(Formal School)**
- समन्वयात्मक संप्रदाय **(Synthetic School)**
- निष्कर्ष

समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र

विषय क्षेत्र का तात्पर्य उन संभावित सीमाओं से है जहां तक किसी भी विषय का अध्ययन अधिक से अधिक किया जा सकता है। समाजशास्त्र के विषय क्षेत्र के संबंध में इंकल ने कहा है कि समाजशास्त्र परिवर्तनशील समाज का अध्ययन करता है इसलिए समाजशास्त्र के अध्ययन की न तो कोई सीमा निर्धारित की जा सकती है और न ही इसके अध्ययन क्षेत्र को बिल्कुल स्पष्ट रूप से परिभाषित किया जा सकता है। समाजशास्त्र के विषय क्षेत्र को लेकर विद्वानों के मत को दो भागों में बांटा जा सकता है। 1- स्वरूपात्मक संप्रदाय अथवा विशिष्टात्मक संप्रदाय 2- समन्वयात्मक संप्रदाय प्रथम संप्रदाय समाजशास्त्र को एक विशेष विज्ञान और द्वितीय संप्रदाय एक सामान्य विज्ञान के रूप में मानता है।

स्वरूपात्मक संप्रदाय अथवा विशिष्टात्मक संप्रदाय **(Formal School)**

इस संप्रदाय के प्रवर्तक जॉर्ज सिमेल को माना जाता है इसके अलावा वीर कांत, वान विज, मैक्स वेबर, टानीज आदि प्रमुख विद्वान है। इस संप्रदाय के समर्थक विद्वानों में रास, पार्क एवं बर्गेस आदि का नाम उल्लेखनीय है। इन विद्वानों का मानना है कि समाजशास्त्र भी अन्य भौतिक, रसायन तथा सामाजिक विज्ञानों की तरह एक स्वतंत्र एवं विशेष विज्ञान है। समाजशास्त्र सामाजिक संबंधों के विशिष्ट स्वरूपों का अध्ययन है इसलिए इस संप्रदाय को स्वरूपात्मक संप्रदाय कहा जाता है।

जॉर्ज सिमेल ने कहा है कि समाजशास्त्र को सामाजिक संबंधों की अंतर्वस्तु का अध्ययन नहीं करके बल्कि सामाजिक संबंधों के स्वरूप का अध्ययन करना चाहिए तभी समाजशास्त्र एक विशिष्ट विज्ञान बन सकेगा। जैसे अनुकरण, सहयोग, प्रतिस्पर्धा, प्रभुत्व, अधीनता एवं श्रम विभाजन आदि प्रमुख सामाजिक संबंध के स्वरूप का अध्ययन करना चाहिए।

वीरकांत ने कहा है कि समाजशास्त्र को अस्पष्टता एवं अनिश्चितता के आरोप से बचाने के लिए मूर्त समाज का ऐतिहासिक दृष्टि से अध्ययन नहीं करना चाहिए। समाजशास्त्र को तो एक विशिष्ट विज्ञान के रूप में मानसिक संबंधों के स्वरूपों का अध्ययन करना चाहिए। जो व्यक्तियों को एक दूसरे से अथवा समूह से बांधते हैं। जैसे यश, सम्मान, प्रेम, लज्जा, स्नेह, समर्पण, सहयोग संघर्ष आदि।

वानविज के अनुसार समाजशास्त्र एक विशिष्ट सामाजिक विज्ञान है जो कि मानवीय संबंधों के स्वरूपों का अध्ययन है और यही उसका विशिष्ट क्षेत्र है।

मैक्स वेबर भी समाजशास्त्र को एक विशिष्ट विज्ञान बनाना चाहते हैं उनके अनुसार समाजशास्त्र सामाजिक क्रियाओं का अध्ययन है और सामाजिक क्रियाएं अर्थ पूर्ण होने के साथ ही साथ दूसरे व्यक्तियों के व्यवहारों को प्रभावित करती हैं जिसके आधार पर नियमों का निर्माण होता है।

उपरोक्त विद्वानों के विचारों से स्पष्ट है कि समाजशास्त्र का क्षेत्र सामाजिक संबंधों के स्वरूपों के अध्ययन तक सीमित है और सभी विद्वान समाजशास्त्र को अन्य सामाजिक विज्ञानों से स्वतंत्र एक विशिष्ट विज्ञान बनाने के पक्ष में है।

स्वरूपात्मक संप्रदाय की आलोचना करते हुए फीचर ने कहा की इन्हें समाजशास्त्री नहीं कह कर सामाजिक दार्शनिक कहना ठीक होगा। क्योंकि इन्होंने सामाजिक जीवन की व्यवहारिक प्रकृति को समझने का प्रयत्न नहीं किया और इस संप्रदाय की आलोचना निम्नलिखित है ।

1. सामाजिक संबंधों के स्वरूपों का अध्ययन समाजशास्त्र के अतिरिक्त अन्य विज्ञानों के द्वारा भी किया जाता है ।

2. . स्वरूप तथा अंतर्वस्तु में भेद किया है और इन्हें एक दूसरे से पृथक माना है जबकि सामाजिक संबंधों के स्वरूप तथा अंतर्वस्तु को एक दूसरे से पृथक करना संभव नहीं है ।
3. समाजशास्त्र को पूर्ण रुप से स्वतंत्र और पर शुद्ध विज्ञान बनाना संभव नहीं है।
4. समाजशास्त्र के विषय क्षेत्र को स्वरूपों तक सीमित करना उचित नहीं है।

समन्वयात्मक संप्रदाय (Synthetic School)

इस संप्रदाय के प्रमुख विद्वानों में सोरोकिन, दुर्खीम, हाबहाउस तथा गिन्सबर्ग आदि का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है। इन सभी विद्वानों का मानना है कि समाजशास्त्र को संपूर्ण समाज का सामान्य अध्ययन करना चाहिए। क्योंकि समाज की प्रकृति जीवो के शरीर की तरह है जिसके विभिन्न अंग एक दूसरे के साथ घनिष्ठ रूप से संबंधित होते हैं तथा एक अंग में होने वाला परिवर्तन दूसरे अंग को भी प्रभावित करता है। समाज भी विभिन्न इकाइयों से मिलकर बना होता है इसलिए उनके पारस्परिक संबंधों को समझने के लिए समाजशास्त्र को एक सामान्य विज्ञान के रूप में विकसित करना होगा। प्रत्येक सामाजिक विज्ञान के द्वारा समाज के किसी एक भाग या पक्ष का ही अध्ययन किया जाता है। संपूर्ण समाज का अध्ययन करने वाला कोई सामाजिक विज्ञान नहीं है। समाजशास्त्र एक ऐसा विषय होगा जो समाज का समग्र रूप में अध्ययन करेगा।

हाबहाउस के अनुसार समाजशास्त्र को अन्य सभी सामाजिक विज्ञानों के प्रमुख सिद्धांतों एवं सार तत्वों के बीच पाए जाने वाले सामान्य तत्वों का पता लगाना और उनका सामान्यीकरण करता है तथा अन्य सामान्य विज्ञान के बीच समन्वय भी स्थापित करना है। समाजशास्त्र सभी सामाजिक विज्ञान उनके प्रमुख धारणाओं के सामान्य स्वरूपों अथवा तत्वों की जानकारी प्राप्त करके , समाज को अस्थाई रखने वाले तथा बदलने वाले कारकों को ज्ञात करके, सामाजिक विकास की प्रवृत्ति एवं दशाओं का पता लगा करके समाजशास्त्र को सामान्य रूप से विकसित करना है।

दुर्खीम भी समाजशास्त्र को एक विशिष्ट विज्ञान न बनाकर बल्कि अन्य सामाजिक विज्ञानों के समान स्वतंत्र नियमों का विकास करने वाला सामान्य विज्ञान बनाना चाहते हैं। दुर्खीम ने कहा है कि समाजशास्त्र में सामाजिक तथ्यों के अध्ययन पर बल दिया जाना चाहिए जोकि समाज में सामाजिक प्रतिनिधियों का निर्माण करते हैं। अतः समाजशास्त्र सामूहिक प्रतिनिधियों का विज्ञान है। सामूहिक प्रतिनिधियों से दुर्खीम का तात्पर्य प्रत्येक समूह समाज में पाए जाने वाले विचारों, भावनाओं एवं धारणाओं के कुलक से है जिन पर व्यक्ति अचेतन रूप से अपने विचारों मनोवृत्तियों एवं व्यवहार के लिए निर्भर करता है।

सोरोकिन भी समाजशास्त्र को एक सामान्य विज्ञान बनाने के पक्षधर हैं। सोरोकिन का विचार है कि सामाजिक घटनाओं को वर्गीकृत कर दिया जाए और प्रत्येक वर्ग का अध्ययन एक विशेष सामाजिक विज्ञान करें तो एक विशेष सामाजिक विज्ञानों के अतिरिक्त एक ऐसे विज्ञान की आवश्यकता होगी जो सामान्य एवं विशेष विज्ञानों के संबंधों का अध्ययन करें। प्रत्येक सामाजिक विज्ञान पूर्णता स्वतंत्र नहीं होता है बल्कि एक दूसरे पर निर्भर होते हैं एक ऐसे सामान्य विज्ञान की आवश्यकता है जो विभिन्न सामाजिक विज्ञानों के निष्कर्षों में समन्वय स्थापित कर सकें समाजशास्त्र ही ऐसा विज्ञान होगा जो पारस्परिक संबंधों या उनके सामान्य तत्वों का अध्ययन करेगा। समाज में आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक संबंध होते हैं जिनमें कुछ सामान्य तत्व होते हैं समाजशास्त्र इन्हीं सामान्य तत्व या अंतर्संबंधों का अध्ययन करने वाला सामान्य विज्ञान होगा।

समन्वयात्मक संप्रदाय के विद्वानों के विचार आलोचनाओं से बच न सके क्योंकि -

1. इस तरह समाजशास्त्र अन्य सामाजिक विज्ञानों की एक खिचड़ी बन जाएगा इसका कोई स्वतंत्र क्षेत्र नहीं होगा ।
2. समस्त सामाजिक विज्ञानों का जब संकलन होगा तो इसकी कोई निश्चित पद्धति नहीं होगी और न ही किसी तत्व का पूर्ण रूप से अध्ययन करने में यह सक्षम होगा।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं की समाजशास्त्र में स्वरूपात्मक एवं समन्वयात्मक दोनों ही दृष्टिकोणों को सम्मिलित किया जाता है क्योंकि समाजशास्त्र में सामान्य सामाजिक संबंधों के महत्व के साथ विशिष्ट सामाजिक संबंधों का भी महत्व है। इस प्रकार समाजशास्त्र विशिष्ट और सामान्य दोनों ही विज्ञान है।

वीरस्टीड के अनुसार

1. समाजशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है प्राकृतिक विज्ञान नहीं ।
2. समाजशास्त्र वास्तविकता का अध्ययन करने वाला विज्ञान है यह एक आदर्शात्मक विज्ञान नहीं है।
3. समाजशास्त्र एक विशुद्ध विज्ञान है न की व्यवहारिक विज्ञान।
4. समाजशास्त्र एक अमूर्त विज्ञान है न की मूर्ति विज्ञान।
5. यह सामान्यीकरण करने वाला विज्ञान है।
6. समाजशास्त्र एक तार्किक एवं अनुभवसिद्ध दोनों ही विज्ञान है।
7. समाजशास्त्र एक सामान्य विज्ञान है न कि विशिष्ट विज्ञान।

अतः हम कह सकते हैं कि समाजशास्त्र एक वास्तविक विशुद्ध का अमूर्त सामान्यीकरण करने वाला तार्किक एवं अनुभव सिद्ध सामान्य विज्ञान है।

संदर्भ ग्रंथ-

1. अग्रवाल, डॉ. जी. के., 2017 ,समाजशास्त्र, बी. ए. प्रथम वर्ष, यस. बी. पी.डी. पब्लिकेशन हाउस,आगरा।

2. रावत, हरीकृष्ण, 2005, समाजशास्त्री चिंतक एवं सिद्धांतकार, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

4.दोस्ती, यस. एल., 2010, आधुनिक समाजशास्त्री विचारक, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली ।

5.रावत, हरीकृष्ण, 2015, उच्चतर समाजशास्त्रीय विश्वकोश , रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

6. शर्मा, एम. एल. एवं शर्मा डी. डी, 2002, समाजशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेश, आगरा।